श्रीमद्भगवद्गीता की प्रामाणिक परम्परा

'एवं परम्पराप्राप्तं इमं राजर्षयो विदुः' (गीता ४.२)

यह **'श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप'** इस परम्परा में प्राप्त हुई है:

१. **श्रीकृष्ण**, २. ब्रह्मा, ३. नारद, ४. व्यास, ५. मध्व, ६. पद्मनाभ, ७. नृहरि, ८. माधव, ९. अक्षोभ्य, १०. जयतीर्थ, ११. ज्ञानसिन्धु, १२. दयानिधि, १३. विद्यानिधि, १४. राजेन्द्र, १५. जयधर्म, १६. पुरुषोत्तम, १७. ब्रह्मण्यतीर्थ, १८. व्यासतीर्थ, १९. लक्ष्मीपति, २०. माधवेन्द्रपुरी, २१. ईश्वरपुरी (नित्यानन्द, अद्वैत), २२. **श्रीचैतन्य महाप्रभु**, २३. रूप (स्वरूप, सनातन), २४. रघुनाथ, जीव, २५. कृष्णदास, २६. नरोत्तम, २७. विश्वनाथ, २८. (बलदेव) जगन्नाथ, २९. भक्तिविनोद, ३०. गौरकिशोर, ३१. भक्तिसिद्धान्त सरस्वती, ३२. **कृष्णकृपामूर्ति श्री श्रीमद् ए. सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद**

एकम् शास्त्रम् देवकी पुत्र गीतम्
एको देवो देवकीपुत्र एव ।
एको मन्त्रस तस्य नामानि यानि
कर्माप्य एकम् तस्य देवस्य सेवा ॥

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दन ।
पार्थो वत्स: सुधीर भोक्ता: दुग्धम् गीतामृतम् महत् ॥

गीता सुगीता कर्तव्या किं अन्यै: शास्त्र विस्तरै: ।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद् विनिसृता ॥